भारतीय त्योहार और उनका कलात्मक महत्व
(Indian Festivals and Artistic Significance)

भारत सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। और इसी विविधता के दर्शन भारतीय त्योहार और उत्सवों में दिखाई देता है। विभिन्न धर्म, समाज, समुदाय और संस्कृति में अपने-अपने तरीके से त्यौहारों को मनाया जाता है।

भारत के प्रमुख त्योहार
Main Festival of India

हम भारत के सभी त्योहारों का वर्णन यहां नहीं कर सकते इसलिए कुछ विशिष्ट और महत्वपूर्ण त्योहारों की चर्चा की जा रही है।

1. **होलीकोत्सवः-** फाल्गुण मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा होलिका दहन की अतिप्राचीन परम्परा है। होली उत्सव को सभी जगह पर अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। इस त्योहार पर बहुत तरह की कहानियां है। कहा जाता है कि हिरण्यकश्यप नाम के राजा नें शिव की कठोर अराधना से वरदान प्राप्त किया कि वह न धरती पर मरे न आकाश, न दिन में मरे न रात में, न घर के अन्दर न घर के बाहर, न मनुष्य से मरे न जानवर से इसी तरह होली की बहुत तरह की कहानियां है।

2. **दीपावलीः-** वर्तमान में दीपावली भले वैभव प्रदर्शन का उत्सव बन गया हो पर यह हमारा राष्ट्रीय त्यौहार है। कार्तिक अमावस्या के दिन शक्ति और सरस्वती के साथ लक्ष्मी पूजा का विधान है। दीपावली के दिन प्रत्येक घर में हाथ से बनाए मिट्टी के दिए जलाए जातें है। दीपावली के आयोजन के पीछे कई कथाएं प्रचलित है। जिनमें से **पहली कथा** हैं- कि द्वापर युग में नरकासुर नामक एक भयानक राक्षस था। नरकासुर के अत्याचार से तंग आकर देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की भगवान विष्णु नें कंस के कारावास में कृष्ण के रूप में जन्म लिया। जब कृष्ण नें नरकासुर का वध किया तो इसी दिन इसके मरन दिन के रूप में दिया जलाया गया जिसे हम छोटी दीपावली के रूप में वर्तमान में मनाते हैं। **दूसरी कथा** के अनुसार इस दिन चौदह वर्ष का वनवास काटकर राम सीता और लक्ष्मण

जब आयोध्या लौटे तो इस दिन आयोध्या वासियों नें दिया जलाकर इनका स्वागत किया था। इस तरह से हमारे भारत में बहुत सारे त्योहार हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

3. **वसंत पंचमी**
4. **महाशिवरात्री**
5. **कृष्ण जन्माष्टमी**
6. **रक्षाबंधन**
7. **नागपंचमी**
8. **रामनवमी**
9. **दशहरा**
10. **इद उल फितर**
11. **क्रिसमस**

भारतीय त्योहारों का कलात्मक महत्व

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीय त्योहार कलात्मक नहीं होते त्योहारों पर स्थानीय कला प्रमुख रूप से दर्शनीय होती है। त्योहारों पर विभिन्न कलाएं अपनी रूप रचना और कला के बिना भारतीय त्योहारों की कल्पना नहीं की जा सकती है। त्योहारों का कलात्मक महत्व निम्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता है।

i. **लोकनृत्यः-** विभिन्न प्रांतो/राज्यों में त्योहारों पर लोकनृत्य की परम्परा रही है। विभिन्न समुदाय और जातियां त्योहारों पर नृत्य के रूप में आत्मवृस्तृत होकर समाज और समिष्ट हो जाता है। उदाहरण के तौर पर हम कुछ राज्य का उल्लेख कर सकते हैं। जैसे- गुजरात में नवरात्री, पजांब में लोढ़ी, उत्तर प्रदेश में होली, मध्य प्रदेश में दशहरा और होली, छतीसगढ़ के बसतर जिले के धुर्क और मडिया इत्यादि। अपने तीज त्योहारों पर विशेष रूप से नृत्य करती है। यह तो उदाहरण मात्र प्रस्तुत किए गए हैं। सम्पूर्ण भारत में त्योहारों पर नृत्य की परम्परा रही है।

ii. **चित्रकलाः-** मनुष्य में सुंदर वस्तुओं को देखने की इच्छा अथवा सौंदर्य जन्मजात होती है। सौंदर्य चेतना के संस्कार चित्रकला के माध्यम से त्योहारों पर उभर कर आते हैं। विभिन्न त्योहारों के अवसर पर लोकचित्र कला के उदारण हमें प्राप्त होते हैं। सावन में

स्त्रियां मेंहदी के सुंदर नमूने से हाथों को सजाती है। हिन्दु धर्म के अन्तर्गत विभिन्न व्रत और त्योहारों का विधान है। सभी व्रत उपवास त्योहार कथा एवं कहानी से जुड़ी होती है। साथ ही कलात्मक भावना से प्रेरित होकर चित्रांकन भी किए जाते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

क्र० स०	त्योहार/पर्व	अनुष्ठान का दिन	चित्रांकन
०१	शीतल अष्टमी	चैत्र कृष्ण अष्टमी	एपन द्वारा दाहिने हाथ का छाप
०२	वट सावित्री व्रत	ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी	घर के आंगन गांव चौराहों पर स्थित वट वृक्ष एपन से हाथ के पांच थापे वट वृक्ष पर एपन द्वारा शिव और पार्वती का चित्र उंगली की सहायता से रोली द्वारा वृक्ष पर स्वास्तिक घर की दिवार पर हल्दी द्वारा शिव पार्वती का चित्र।
०३	हरतालिका तीज	भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतिया।	सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा गोबर अथवा कच्ची मिट्टी से शिव पार्वती की मूर्ति बनाना एवं पूजा करना।
०४	होली	फाल्गुनी पूर्णिमा	भूमी पर सुखे आटे एवं अबीर से रंगोली तैयार करना
०५	दीपवाली	कार्तिक मास के अमावस्या	इस दिन हाथों से फूलों का माला बनाया जाता है। और लक्ष्मी गणेश की मूर्ति पर चढ़ाया जाता है। इस दिन महिलाएं अपने अपने घरों में सुंदर अल्पणाओं का भी निर्माण करती है। और घरों को सुस्सज्जित करती है।
०६	करवाचौथ	कार्तिक कृष्ण चतुर्थी	दीवार पर एपन द्वारा चंद्र एवं सुर्य का प्रतीक चिह्न बनाकर पूजा किया जाता है।
०७	जन्माष्टमी	भाद्रपदकृष्ण अष्टमी	छोटे छोटे खिलौने और रंगो से कृष्ण की झांकी तथा जमीन पर रंगीन बुरादे एवं रंगो से रंगीन चित्र बनाना।

iii. **लोकगीतः–** लोकगीत में गायन के साथ-साथ लोक वाद्य यंत्रो का भी प्रयोग किया जाता है। भिन्न क्षेत्रों में त्योहारों पर अपनी संस्कृति के अनुसार लोकगीत की कलात्मक परम्परा है। कुछ उदाहरण निम्न है।

a) **हरियाणा में तीज के त्योहार परः–** सावन के महीने में माता का दुलार और सास के उपालम्भ दोनो भावों का नायिका के द्वारा प्रस्तुती की जाती है। विहर और सासरे की गीत में की जाती है।

b) **उतर प्रदेश में होली परः–** उतर प्रदेश में ब्रज की होली प्रसिद्ध है। कुछ होली गीत इस प्रकार हैं–

मैं ब्रज की गोपिका, राधा रंगीले में नाम श्याम आ जैयो, इत्यादि।

इस तरह से हम देखते हैं कि भारतीय त्योहारों पर कला का विशेष महत्व दिखाई देता है।

Raju Kumar
(Guest Faculty)
Mob. No.- 8797037111
Woman's Training College
Mob No.- rajumanjay@gmail.com
B.Ed. 1st Year.
EPC – 2 (Drama Art and Education)
Topic:- भारतीय त्योहार और उनका कलात्मक महत्व